GARG Date Page

इकाई 3 -

"छोगे"

लोककथा कहने वाले कथक्कड़ अपनी कथा को आकर्षक और प्रभावोत्पादक बनाने के लिये विभिन्न छोगों का प्रयोग करता है। वह कथा कहने से पहले कुछ पद्यात्मक उक्तियों का लयपूर्ण उच्चारण करता है। इन्हीं पद्यात्मक पंक्तियों के लयपूर्ण उच्चारण को राजस्थानी में 'छोगे' कहते हैं। इनमें नैतिक उपदेश, सद्असद् की प्रवृत्ति उजागर होती है तो कहीं कथा की विषयवस्तु संबंधित बातें होती हैं। श्रोता की जिज्ञासा जाग्रत करने हेतु भी प्रत्यप्रयत्न किया जाता है। कुछ छोगे इस प्रकार उदाहरणार्थ दिये गये हैं-

1. क्रमसंवर्द्धक :-

एक थो गिड़गिन्दो राजा थोक थोक थोई नीं
जिणनें बसाया तीन गांव दो ऊजड़ एक बसैई नीं
जिणमें रहया तीन कुम्हार दो ठोटो एक घड़नो जाणै ईनीं
ज्यां घड़ी तीन हाड़ियां दो फूटोड़ी एक चढ़ै ई नीं
ज्यां में रांधियां तीन चावल दो कटकटा एक सीजै ईनीं

2. नैतिक उपदेशात्मक प्रधान :- कुछ ऐसे छंद भी कहे जाते हैं जो सामाजिक दृष्टि से अच्छाई बुराई का बोध कराते हैं। ये लोक व्यवहार में सद्-असद् के सूचक होते हैं।

बात साची भली, पोथी बांची भली
देह साजी भली, बहू लाजी भली
लूआं बाजी भली, नौबत गाजी भली
गोय दूजी भली, गवर पूजी भली

Scanned with CamScanner

जोबन जौड़ी भली, कच्छी घोड़ी भली
मौत मौड़ी भली, मंसा घोड़ी भली
अंब कैरी भली, माला फेरी भली
कांठल कूली भली, धीणों खाली भली ।।
भोजाई री बोल खोटौ, रिपियां रौ कौल खोटौ
बांणियें री आसौ खोटौ, जेल रौ बासो खोटौ
भकलियैं रौ लाटो खोटौ, बामण रौ भाटो खोटो
अवड़ बीचै खाली खोटी, खेत बीचै बाली खोटी
बाबोजी री चेली खोटी, घरवाली री बोली खोटी
मौसर री रीत भूंडी, दासी सूं प्रीत भूंडी
पाडौसी सूं राड़ भूंडी कांटां री बाड़ भूंडी ।

इस प्रकार सद्-असद् का ज्ञान कराने वाले इन ढोगों का भी महत्व है। कथक्कड़ उक्त ढोगों का प्रयोग कर अपनी बात की सत्यता पर जोर देता है। क्योंकि 'बात कैवूं साची' कहकर श्रोता के लिये कथक्कड़ अपनी बात को विश्वसनीय बना देता है।

3. जीवन अनुभवसिद्ध ढोगे :- इनमें व्यक्ति के जीवन के अनुभवों का निचोड़ होता है। विविध परिस्थितियों से गुजरने वाले तथा घाट-घाट का पानी पीने वाले अनुभव सिद्ध व्यक्तियों के अनुभवों का बोध कराने की पूर्ण क्षमता इन ढोगों में होती है।

बाप जैड़ा बेटा रूंख जैड़ा टेटा
घड़ै जैड़ी ठीकरी, मायड़ जैड़ी डीकरी
झाड़ जैड़ा मूल, धरती जैड़ी धूल
रूई जैड़ो सूत, माइत जैड़ा पूत
भाखर जैड़ा भाटा, बिरखा जैड़ा लाटा

Scanned with CamScanner

GARG Date Page

रूंखां जैड़ा छोडा मण्ड़ी जैड़ा मोडा

4. लोकप्रसिद्ध व्यक्ति प्रधान :- इन दोहों में लोकप्रसिद्ध व्यक्तियों, वस्तुओं, स्थानों, पशुओं आदि का उल्लेख होता है जिससे श्रोता को इनकी जानकारी हो जाए।

प्रथम पिण्ड पांढी रो, देवल तो आबू रा
हवेलियां तो जैसाणै री, गढ़ तो चितौड़ रो
ताल तो भोपाल रो, मिन्दर तो मथुरा रा
नीर तो गंगाजी रो, दीणो तो भैंस रो

5. जनपदीय झांकी प्रधान :- कभी 2 कथक्कड़ ऐसे लोकदोहों का प्रयोग करता है जिनमें जनपदीय झांकी दृष्टिगत होती है। किसी जनपद की भौगोलिक स्थिति वहाँ की प्रसिद्ध वस्तु, फल, फूल, श्रृंगार प्रसाधन, अनाज, वस्त्र, अस्त्र-शस्त्र, घोड़े, बैल आदि का उल्लेख इन दोहों में होता है जिससे वहाँ की संस्कृति की सतरंगी आभा झलकती है।

झाल बखांणु सिंधु री, मूंग मंडोवर देस।
झींणो कपड़ो मालवै, मारू मुरधर देस॥
कीर मतीरा बाजरी, खेलर काखर खांण।
धान र धीणा धोपटा, बरसालै बीकांणु॥
मौज सुरंगा मालिया, फूल बाग चहु फेर।
चीख अनोखी चौवटे, अै बातां आंबेर॥

इसी प्रकार कथक्कड़ कथा के प्रारम्भ में पद्यात्मक बिड़दाव (विरुद गान) का भी सस्वर लययुक्त उच्चारण करता है। इनमें कथा की महत्ता, कथा कहने का ढंग,

Scanned with CamScanner

कथक्कड़ की बात कहने में कुशलता आदि को उजागर किया जाता है। बात कहने का अपना एक अलग ही ढंग होता है। कुशल कथक्कड़ अवसरानुकूल भाषा का प्रयोग करके, भावानुकूल स्वरों के आरोह-अवरोह तथा मुखाकृति द्वारा बात को बोधगम्य बनाता है। वह यथावसर बीच-बीच में पद्यों का प्रयोग करता है। बात का महत्त्व बहुत अधिक है क्योंकि बातों ही बातों में प्रीति, नीति और रीति का पाठ लोगों को सिखाया जा सकता है। बात के महत्त्व को प्रतिपादित करने वाले कुछ दोहे दृष्टव्य हैं-

ज्यूं केलै रै पात में, पात-पात में पात।
त्यूं चातर री बात में, बात-बात में बात।।
बात-बात सब ओक है, बात-बात में फैण।
वो इज काजुल ठीकरी, वो इज काजल नैण।।
सोरठियो दूहो भलो, भली मरवण री बात।
जोबन छाई धण भली, तारां छाई रात।।